

Original Thesis (1976)
A Critical Study of the Sūta Saṁhitā
by Dr Shivamurthy Swamiji
[Banaras Hindu University, Varanasi, India]

- 4 -

Plagiarism (1981)
Sūta-Saṁhitā kā Alocanātmak Adhyayan
by Dr Ramakant Jha
[Kashi Vidyapeeth University, Varanasi, India]

All the remaining passages quoted by the editor from different sources, including the Skanda-Purāṇa edited by him, only give an impression that there is an Upapurāṇa by the name of Skānda, but they certainly do not offer sufficient evidence to prove that the Samhitās constitute that Upapurāṇa. Hazra, who made a critical survey of the entire Upapurāṇa literature, has conclusively shown that the third Upapurāṇa sometimes called Skānda is only another name of Nānda (or Nandī) - a Śākta-Upapurāṇa - which is now lost.¹⁶

[pp. 5-6]

XXXX

Taking into account what the Samhitās have to say on this topic, it is beyond doubt that they consider themselves as belonging to the Mahāpurāṇa: 1) The Sūta-Saṁhitā in the first chapter of its Śivamahātmya-Khaṇḍa, before proceeding to specify the Samhitās constituting the Skanda-Purāṇa, mentions the name of this Purāṇa in the list of Mahāpurāṇas only and not in that of Upapurāṇas;²⁰ ii) The Skanda-Purāṇa is generally assigned the thirteenth position among the eighteen Mahāpurāṇas and the Śaṅkara-Saṁhitā clearly states that the six Samhitās belong to the Skanda-Purāṇa which is the thirteenth in order;²¹ iii) Mādhavamantri, the commentator of the Sūta-Saṁhitā, also writes that the Samhitās enlisted by the text are the divisions of the thirteenth Purāṇa known as Skanda,²² thereby confirming that the Samhitās were considered to be an integral part of the Skanda-Mahāpurāṇa as early as the 14th century A.D. Hazra also endorses the view that though the Khaṇḍa division of the Skanda-Purāṇa is supported by the Nāradīya-Purāṇa, its real division seems to have been made into six Samhitās, Sanatkumāra, etc., and that the Khaṇḍas which constitute the Bombay edition of the Skanda-Purāṇa originally belonged to one or other of these Samhitās.²³

[pp. 7-8]

¹⁶ R.C.Hazra, Studies in the Upapurāṇas, vol.II, pp.476-78.

²³ R.C.Hazra, Studies in the Purāṇic Records on Hindu Rites and Customs, pp.158, 163.

श्रीकृष्णदास द्वारा विभिन्न स्रोतों से गृहीत उद्धरणों से इतना सिद्ध होता है कि 'स्कान्द' नाम का एक उपपुराण भी है, किन्तु इससे यह नहीं सिद्ध होता है कि संहिता से उपपुराण बनता है। उपपुराण साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन करने वाले आर.सी.हाजरा इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि तृतीय उपपुराण (जिसे स्कान्द भी कहते हैं) मात्र 'नान्द' उपपुराण का नामान्तर है^१। श्री हाजरा के अनुसार तृतीय उपपुराण 'नान्द' ही है। 'स्कन्द' उसी का अपर नाम है।

[pp. 22-23]

XXXX

संहिताओं को उपपुराण इसलिए भी नहीं माना जा सकता कि संहिताएं अपने को महापुराण से सम्बद्ध मानती हैं न कि उपपुराण से। सूतसंहिता अपने 'शिवमाहात्म्य' खण्ड के प्रथम अध्याय में स्कन्दपुराण को पुराणों की सूची में गिनती है, न कि उपपुराणों की सूची में^३। स्कन्दपुराण सामान्यतः अष्टादशपुराणों में तेरहवें स्थान पर गिना जाता है। सूतसंहिता में भी इसका तेरहवां स्थान ही है। शंकरसंहिता स्पष्ट रूप से घोषणा करती है कि ये छः संहिताएं उस स्कन्दपुराण से सम्बद्ध हैं, जो पुराणों में तेरहवां है^४। सूतसंहिता के टीकाकार माधवमन्त्री ने भी इन संहिताओं को अष्टादश पुराणों में त्रयोदश स्कन्दपुराण का ही अंग स्वीकार किया है^५। फलतः संहिताएं १४वीं शती से स्कन्दपुराण का आन्तरिक अंग मानी जाती रही हैं। आर.सी. हाजरा का भी अभिमत है कि यद्यपि स्कन्दपुराण के खण्ड-विभाजन का समर्थन नारदीय पुराण में भी है, किन्तु इसका वास्तविक विभाजन सनत्कुमारादि छः संहिताओं में है। स्कन्दपुराण के बम्बई संस्करण में प्राप्त खण्ड विभाजन मूलरूप से किसी न किसी संहिता से सम्बद्ध है^६।

[p. 23]

१. स्टडीज इन दि उपपुराणाज, भाग २, पृ. ४७६।

XXXX

४. 'तत्र स्कान्दं प्रवक्ष्यामि पुराणेषु त्रयोदशम् ।
संहिताभिस्तथा षड्भिलक्षैर्ग्रन्थैर्विराजितम् ॥' —शङ्करसंहिता
५. 'अथेदानीं विवक्षितां सूतसंहितामवतारयितुमनुक्रान्तानां पुराणानां मध्ये त्रयोदशस्य स्कन्दपुराणस्य संहितादिविभागमाह' । —सू.सं.१/१/१९, तात्पर्यदीपिका टीका
६. स्टडीज इन दि पुराणिक रेकार्ड्स आन हिन्दू राइट्स एण्ड कस्टम्स, पृ. १५८, १६३।